International Journal of History 2019; 1(1): 30-32

INTERNATIONAL JOURNAL OF HISTORY

E-ISSN: 2706-9117
P-ISSN: 2706-9109
IJH 2019; 1(1): 30-32
Received: 20-05-2019
Accepted: 24-06-2019

डॉ. व्ही. जी. सोमकुवर
गजमल तुळशिराम पाटील
महाविद्यालय, महाराष्ट्र, भारत

Corresponding Author:
डॉ. व्ही. जी. सोमकुवर
गजमल तुळशिराम पाटील
महाविद्यालय, महाराष्ट्र, भारत

रेल परिवहन के उद्भव और विकास का ऐतिहासिक अध्ययन (सन 1830 से 1890 तक)

डॉ. व्ही. जी. सोमकुवर

सारांश

आज के दौर में रेल विश्व की सबसे बडी परिवहन व्यवस्था है। विश्व के सभी देशों में कम से कम किराए पर आवागमन करने का, वस्तुओं या चिजों की आपूर्ति का रेल्वे उत्तम पर्याय रहा है। इतना ही नही, रेल परिवहन व्यवस्था में सबसे ज्यादा रोजगार उपलब्ध है। आज रेल परिवहन व्यवस्था में बहुत प्रगती हुई दिखाई देती है। बहुत सें देशों में 'मेट्रो रेल' यातायात का प्रमुख साधन बन गया है। विश्व के विकास में रेल परिवहन का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। औद्योगिक क्रांती के बाद विकास को और उँचा करने में भी रेल्वे का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इसीकारण रेल परिवहन व्यवस्था के बारे में जानना जरूरी लगता है। भारत में इसे कुछ शहरों में जीवनदायीनीं शी कहा जाता है। प्रस्तुत शोध पत्र में रेलवे का विश्व में उगम् किस प्रकार हुआ एव् इंग्लैंड, अमेरिका और भारत में 1890 तक रेल संचार की क्या स्थिती थी तथा उसके विस्तार का अध्ययन किया गया है।

बिजसंज्ञा : रेल परिवहन, उद्भव, विस्तारीकरण, सामाजिक जिवन पर प्रभाव.

उद्देश: = रेलवे का उद्भव और विकास किस प्रकार हुआ इसका अध्ययन करना।
= रेलवे के औद्योगिक क्रांति में योगदान का अध्ययन करना।

अध्ययन का क्षेत्र : शोध अध्ययन की समय सीमा रेलवे के उद्भव से लेकर 1890 तक का है। इसके विस्तारीकरण का अध्ययन इग्लंड, अमेरिका और भारत देश तक सिमित किया गया है।

विधी : प्रस्तुत शोध 'दुय्यम सामग्री के विश्लेषणात्मक विधी' पर आधारीत है।

प्रस्तावना

रेलवे (त्मसूंल) यह अंग्रेजी शब्द है। इसका अर्थ 'रूलों का रास्ता' होता है। यह यातायात एव्म परिवहन व्यवस्था से जुडा हुआ है। सन 1830 में इंग्लैंड में लिव्हरपुल से मॅचेंस्टर तक रेलवे शुरू हुई थी। इसका लोगों पर इतना प्रभाव पडा कि रेलवे यानी एक विशिष्ट यातायात का साधन यह समिकरण ही बन गया और देखते ही देखते रेलवे यह शब्द विश्व की सारी भाषाओं में रूढसा हो गया।

रेलवे व्यवस्था कें लोहमार्ग, लोहमार्ग पे चलनेवाला डबा जिसे 'वाघीण' भी कहा जाता है और स्वयंचलीत इंजिन प्रमुख होते है। रेलवे में आगे चलकर यांत्रीकरण हुआ उसकी महत्त्वपूर्ण शैली एव उत्कृष्ठता कि वजह से रेलवे बहुत ही प्रसिध्द हुई। अन्य किसी भी यातायात के साधन के मुकाबले माल की आपूर्ति एव यात्रीयों को यहॉ से वहॉ पहुंचाने की क्षमता रेलवे में ज्यादा है। एवं सस्ते किराए पर भी लंबीदूरी तक यात्रा करने का आसान परिवहन है। उन्नीसवी शताब्दी में औद्योगिक क्रांती के निर्माण में रेलवे ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी थी। बिसवी और इक्कीसवीं शती में भी परिवहन क्षेत्र में रेलवे का क्रमांक प्रथम एव लोगोंका सबसे पसंदीदा साधन रहा है।

रेलवे प्रारंभ होने की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

सोलहवी शती में कोयला खानों का विकास हुआ था। इन खानों में से कोयला ढोंने के लिए विभीन्न साधन इस्तेमाल किए जाते थे। उसमें का एक माध्यम यह था की, कोयला किसी 'ड्रम' या टोकरी में भरकर उसे चक्का लगाकर पटरी पें ढकेला जाता था। युरोप में इस प्रकार कोयला चक्का लगाए हुए विभीन्न ड्रमों को अश्वबलों की सहायता से ऊपर लाया जाता था। यह परंपरा जर्मनी और फ्रान्स में प्रचलित हुई थी।

सत्रहवीं शती में जर्मनी से कुछ इंजिनियर इंग्लैंड आये। इन्होने ब्रिटीश खानों में कोयला निकालने की फ्रान्स और जर्मनी की प्राचीन विधी अपनाई लेकिन इसमें सुधार करना जरूरी लगा। उन्होंने इसमें कुछ मूलभूत बदलाव किए और आखीर कार उन्हे सफलता मिली। उन्होने कोयले के खानोंसे लेकर

बंदरगाहों तक जो खदानों से दूर हुआ करते थे। माल की आपूर्ति करने के लिए बहुत से लोहमार्ग बनाए। तबसे रेलवे के यांत्रिकीकरण में सुधार करने की बात सोचकर रेलवे विकास करने का युग इंग्लड में आरंभ हुआ। यानी रेलवे प्रारंभ करने की कल्पना फ्रान्स और जर्मनी की कोयला खानों से आरंभ होती है। इसका वास्तविक विकास मात्र इंग्लैंड की कोयला खानो सें हुआ दिखाई देता है।

बाष्प की शक्ति से चलने वाले 'इंजिन' का शोध एव् रेलवे में विकास का प्रारंभ

अठारहवीं शताब्दी में इंग्लड में खानों से निकलने वाला कोयला एक जगह से दूसरी जगह ले जाने के लिए में लोहमार्ग का निर्माण हुआ। इसे सन 1758 में इंग्लैंड की संसद ने मान्यता प्रदान की। इस काल में जेम्स वॉट सन 1788 में बाष्प पर चलने वाले इंजिन का निर्माण किया। यहॉ से औद्योगिक क्षेत्र में रेल का आरंभ हुआ।

इंग्लड के सॅम्युमल हॉम्फ्रे इस कोयला खदान मालिकों नें ट्रेवधिक को रेल का निर्माण करने को कहा। ट्रेवधिक ने 'इनव्हिक्टा' इस बाष्प के इंजिन को रेलवे से लगाकर 21 फरवरी 1804 को 50 टन माल भरी हुई वाघीण एव् 60 आदमी बिठाकर 8 कि.मी. प्रति घंटे की रफ्तार से 16 किमी तक लोहमार्ग से रेल चलाई थी।

सन 1823 में जॉर्ज स्टिव्हेन्सन नामक इंजिनियर को स्टाकन के ठेकेदारों ने 'स्टाकन से लेकर डार्लिग्टन' तक के बंदरगाह तक रेलमार्ग बनाने का काम सौपा। इन्होने दो साल के अथक परिश्रम के पश्चात 27 सितंम्बर 1825 में रेल का उदघाटन किया। इंजिन का उपयोग करके यात्री और माल दोनों को एकसाथ 32 किमी तक रेल चलाई। यह विश्व का सबसे पहला प्रयोग था जो कामयाब हुआ। यह पहली सार्वजनिक रेल व्यवस्था साबीत हुई। इसके बाद 1827 में स्टीव्हेन्सन नें 'रॉयल जॉर्ज नामक रेलवे इंजिन का उपयोग किया। इससे प्रवासी एव् माल दोनों एक ही गाडी से जाने लगे और इसके बाद रेल विस्तार का युग आरंभ हुआ।

लिव्हरपुल – मचेस्टर रेलवे कंपनी की स्थापना

इंग्लड में रेल का सुनियोजन एवं विस्तार करने के उद्देश से सन 1827 के समय में लिव्हरपुल – मॅचेंस्टर रेलवे कंपनी की स्थापना हुई। इस कंपनीने उस समय का प्रसिध्द बंदरगाह लिव्हरपुल से प्रसिध्द औद्योगिक केंद्र मॅचेस्टर तक 50 किमी की आधुनिक एव अद्यायावत रेलवे परिवहन व्यवस्था बनाने की योजना तैयार की। इस योजना को प्रत्यक्ष अंमल में लाने की जिम्मेदारी स्टीव्हेन्सन को सौपी। इस कंपनी की स्थापना से रेलवे में आधुनिक युग का आरंभ हुआ।

रॉकेट इंजिन का उपयोग कर रेलवे युग का उदय

लिव्हरपुल – मेचेस्टर कंपनी ने सौपा हुआ काम करने के उद्देश से स्टिव्हेन्सन इन्होने आरंभ किया। इस कार्य के उपयोग में सबसे मजबूत इंजिन का इस्तेमाल होना जरूरी है ऐसा उन्हे लगा। इस कारण उन्होने रेलवे इंजिन की स्पर्धा आयोजित की। इसके लिए रेनहिल जगह पर नई बनावट के लोहमार्ग बिछाए गए उस पर एक सप्ताह तक पाच रेलवे व इंजिन को चलाकर उनकी परिक्षा ली गई। इसमें स्टिव्हेन्सन इनका बनाया हुआ 'रॉकेट' इंजिन अव्वल रहा। इसका ही इस्तेमाल लिव्हरपुल मेचेस्टर लोहमार्ग पर चलनेवाली रेलवे गाडी के लिए किया गया। 15 सितंम्बर 1830 को लिव्हरपुल – मॅचेस्टर रेलवे परिवहन व्यवस्था का ड्यूट ऑफ वेलिंग्टन व्दारा उदघाटन हुआ। इसी समय से विश्व में परिवहन क्षेत्र में मानवी उपक्रम का रेलवे युग का शुभारंभ हुआ।

रेलवे उगम् का सामाजिक जिवन पर पडा प्रभाव

विश्व में सबसे पहले सार्वजनिक रेलगाडी ब्रिटेन (इंग्लैंड) में चली। सन 1830 में लिव्हरपुल–मेचेस्टर एव बॉल्टीमोर–ओहायओ इन दो रेलवे कंपनीयों के स्थापन होने से लेकर 20–25 सालों में विश्व में बहुत से देशों में रेल यातायात आरंभ हुई। और देखते ही देखते सन 1870 के दशक में रेलवे परिवहन व्यवस्था को जागतिक दर्जा प्राप्त हुआ। यह सबसे गतिमान परिवहन व्यवस्था साबीत हुई इसे सर्व मान्यता मिली। रेलवे परिवहन व्यवस्था का औद्योगिक विकास होने में लाभ हुआ। इसका लोगों के सामाजिक जिवन पर बहुत ही प्रभाव पडा। इसे एक प्रकार सें सामाजिक क्रांति का स्वरूप प्राप्त हुआ। समाज में आपसी मेलजोल जुटानें, लोंगो में भावनाओं का प्रसार करनें एव् जल्द सें जल्द एक प्रान्त सें दूसरे प्रान्त में जाने का एकमात्र साधन रेलवे परिवहन साबित हुआ। समाज में एकसंघता स्थापित करने का क्रांतिकारी योगदान रेल परिवहन का रहा है।

सन 1830 – 1890 तक रेलवे विस्तारीकरण

अ) इंग्लैंड

इंग्लैंड में विश्व की सबसे पहिली रेल चलाने के पश्चात बहुत ही विस्तारीकरण हुआ। केवल पंधरा वर्षो में ही 2100 किमी अंतराल के रेलवे लाईन कार्यान्वीत हुई। इसके पश्चात इंग्लड सरकारने 400 और नए रेलमार्ग बनाने की स्विकृती प्रदान की। सन 1830–1870 का युग रेलवे परिवहन विस्तार का युग जाना जाता है। इस काल में सभी रेलमार्ग की लंबाई लगभग 22000 किमी तक फैली हुई थी। सन 1863 में पहली मेट्रोरेल चलाई गई। सन 1873–1886 इस दरम्यान ग्रेट ब्रिटन में उस समय का सबसे लंबा और सेव्हर्न नदी के निचे से चलने वाला भूयारी (मेट्रो) रेलमार्ग बनाया गया था। सन 1890 में एंडीबरों शहर के नजदीक फोर्थ नदीके खाडी पे सबसें लंबा 'पोलादी पुल' बनाया गया। यह अभियांत्रीकी क्षेत्र में हुई बडी क्रांति थी। 1890 तक इंग्लड में रेलवे का विस्तार इस कदर हुआ कि, लंडन से रात 10 बजे निकला टपाल, समाचारपत्र, सुबह 10 बजे तक डब्लिन एव आयर्लंड के सभी प्रमुख शहरों में पहुचता था। इस तरह इंग्लड में रेलवे का विस्तारीकरण हुआ।

ब) अमेरिका

इ.स.1830 में बॉल्टीमोर ॲण्ड ओहायओ रेलरोड कंपनी के व्दारा अमेरिका में पहली रेल परिवहन व्यवस्था आरंभ हुई। युरोप खंड के बाहर रेलवे परिवहन का प्रसार प्रारंभ में उत्तर अमेरिका में हुआ। ब्रिटेन से पुराने राजकीय संबंध औद्योगिक एव्म सांस्कृतिक संबंधो के कारण अमेरिका के रेलवे परिवहन व्यवस्था पर ब्रिटन तंत्रविद्या, बनाने का तरीका एव्म व्यवस्थापन का प्रभाव हुआं। अमेरिका में बहुत सी छोटी–छोटी रेलवे कंपनीयों की स्थापना हुई। उन्होने कम अंतराल के लोहमार्ग बनाए।

सन 1840 में न्यूयॉर्क से वाशिंग्टन को जाने के लिए विभीन्न जगह से जाना पडता था। इन छोटी कंपनियों को बडी कंपनियों में समायोजित करने का कानून पारीत किया गया। इस कानून के व्दारा युनियन पॅसिफिक व सेन्ट्रल पॅसिफिक इन दोन बडी कंपनीयों का आरंभ हुआ। इन दो कंपनीयों ने सन 1869 में दोनों दिशाओं को जोडने का रेलमार्ग बनाने की स्पर्धा का आयोजन किया और उटा राज्य के प्रामटरी नामक गाव के बाहर एक सोने की किल ढोंककर विश्व की पहीली खंडपार रेल्वे परिवहन व्यवस्था का शुभारंभ किया।

इसके पश्चात अमेरिका में रेलवे परिवहन का बहुतही तेजी से विकास हुआ। विशाल निर्मणूष्य पश्चिम भाग का वसाहतीकरण करने का, एव्म रेलवे पुल, रेलमार्ग बनाने की योजना, ब्याज एव् जमीन उपलब्ध कराने की कोशिश सरकारने की। इस कारण उन्नीसवी शताब्दी के आखीर में अमेरिका के पूरब किनारे से

लेकर पश्चिम किनारे तक अखंड यात्री एव् माल ढोनेवाले नऊ नये रेलमार्ग अस्तित्व में आये थे। यह अमेरिका के रेल्वे विकास का दौर था।

क) भारत:

इंग्लैंड में रेलवे व्यवस्था आरंभ हुई थी। भारत में इंग्लैंड की 'इस्ट इंडीया कंपनी' व्यापार करने आई थी। लेकिन देखते ही देखते वह भारत की राजसत्ता में परिवर्तीत हुई थी। इस इष्ट इंडीया कंपनी के अधिकारीयों कों भारत में भी रेलवे आरंभ करने की जरूरत महसूस हुई। लेकिन इससे फायदा–नुकसान पर बहस छीडी। अंतता सन 1849 में इस्ट इंडीया कंपनी के व्यवस्थापन में जो पंधरा योजना रखी थी। उसमे रेलवेकी दो योजनाओं को मंजूरी मिली। उसमें पुरब में कलकत्ता से लेकर राणीगंज तक 200 किमी लंबा एव् पश्चिम में मुंबई से लेकर कल्याण तक 50 किमी तक लंबा रेलमार्ग बनाने की योजना थी। इनमें से दूसरी योजना प्रथमता कार्यान्वीत होकर सन 16 एप्रिल 1853 में मुंबई प्रांत के बोरीबंदर से ठाणे तक 34 किमी लंबाई की भारत में पहली रेलवे परिवहन व्यवस्था आरंभ हुई। इसको चलाने का एव्म व्यवस्थापन करने का जीम्मा 'ग्रेट इंडीयन पेनिन्शुला रेलवे' इस कंपनी के तरफ दिया गया था। अगले ही वर्ष 15 अगस्त 1854 में भारत का दूसरा रेलमार्ग कलकत्ता के हावडा से लेकर हुगली तक 30 किमी तक बनाया गया। और इस रेलवे मार्ग पर रेल परिवहन आरंभ हुआ।

भारत में आरंभ हुई रेलवे का विस्तार लार्ड डलहौसी इस गव्हर्नर जनरल के समय में हुआ। सन 1857 के पश्चात रेलवे मार्ग को अधिक विस्तार करने का दौर आरंभ हुआ। भारत की नैसर्गिक भिन्नता एव् उच–निच जमिन का प्रदेश होते हुये भी रेलमार्ग बनाने का काम जोरों सें आरंभ हुआ। देखते ही देखते रेलवे परिवहन ने विस्तार किया। मुंबई–पुणे इस रेलमार्ग के कर्जत से लेकर लोणावला यह बहूतही ऊचाईवाला रेलमार्ग बनाकर रेल परिवहन व्यवस्था ने विक्रम किया।

सन 1869 तक भारत में मुंबई से जबलपूर, कलकत्ता से गाझीयाबाद, एव् दिल्ली से मुलतान इन रेलमार्ग के अलावा लगभग 6000 किमी लंबाई की रेलवे परिवहन व्यवस्था पर विस्तार हुआ था।

निष्कर्ष:

विश्व के सभी देशों में बढतें औद्योगिकरण के कारण उत्पादन में बढोत्तरी हुई थी। इस के अलावा अन्य महत्वपूर्ण कृषी प्रधान देशो में उत्पादित होनेवाले कृषी माल को एव्म अन्य कच्चे माल को एक जगह से दूसरी जगह ले जाने का सबसे सस्ता परिवहन रेलवे परिवहन है ऐसा प्रतीत होता है। इस कारण भू–मार्ग के रास्ते रेलवे व्दारा कम समय में सुरक्षित एव् सस्ते दामों में माल एव्म यात्रियों का आवागमन करने का एकमात्र पर्याय रेलवे परिवहन व्यवस्था है। आज लाखों लोग रोजाना रेलवे से यात्रा करते हैं। यह सबसे लोकप्रिय एव्म सस्ती परिवहन सेवा है। आज भी भारत में सबसे सस्ता किराया रेलवे का है, इसके अलावा माल के आवागमन का खर्चा भी कम आता है। इसी कारण आज विश्व में रेलवे परिवहन व्यवस्था लोकप्रिय होती हुई दिखाई देती है।

रेलवे परिवहन के पहिले पर्व में आखरी समय तक रेलमार्ग का जाल सभी विश्वभर फैला प्रतीत होता है। सन 1890 तक विश्व की सभी रेलमार्ग की लंबाई करीबन 4,50,000 किमी तक फैलाकर इसका विस्तारीकरण हुआ प्रतीत होता है।

संदर्भ

1. Sharma Jagdish P, World History, Low price publications, Delhi, 1993, 63-68.
2. Rav BV, World History, Sterling Publications, P.L., New Delhi, 1984, 265-266.
3. John Thorn, Roger lockyer & David Smith., A History of England, The english language Book Society, Londan, 1961, 429-433.
4. Elton GR, England under the Tudurs, Surjeet publications, Delhi, 1977, 239-243.
5. Manjumdas RK, Srivastava AN. History of United states of America, Surjeet Book Depot, Delhi, 1975, 202-203.
6. Henry Bomford Parkes, The united states of America, Scientific Book Ageney, Calcutta, 1972, 222-223.
7. Dutt R. Palme, India Today, Manisha Publications calcutta, 1970, 108-110.
8. डॉ.प्रसाद राजीव नयन, आधुनिक विश्व का इतिहास, भारती भवन (पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्युटर्स), पटना, 1995 पृ.क्र. 106–107.
9. डॉ.रॉय सुजाता, डॉ.कश्यप श्याम, आधुनिक भारत का इतिहास (स्वतंत्रता प्राप्ती और देश विभाजन तक), हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, 2006, पृ.क्र.138.139.
10. डॉ.कुमार हरीश, भारत का आर्थिक इतिहास अर्पण पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2017, पृ.क्र.126.127.
11. श्री.जोशी लक्ष्मणशास्त्री, मराठी विश्वकोष, खंड 15, मराठा राज्य मराठी विश्वकोष निर्मिती मंडळ, मुंबई, 1995, पृ.क्र. 01. 07.